5

जनसंख्या शिक्षा के संदर्भ में लैंगिक अनुपात में बदलाव एवं उसके अनुप्रयोग

रमेश कुमार *

विकासशील देश की समस्याओं की जड़ों में देखें तो इसका एक महत्वपूर्ण कारण जनसंख्या वृद्धि दर रहा है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण से उत्पन्न समस्याओं से जूझ रहे प्रत्येक देश के लिए यह आवश्यक है कि वह लोगों को जनसंख्या शिक्षा से अवगत कराए। प्रस्तुत लेख में भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण हो रहे बदलावों एवं उसके दुष्परिणामों की विवेचना करते हुए शिक्षा के आरंभिक स्तर से ही जनसंख्या शिक्षा के प्रति चेतना जाग्रत करने पर बल दिया गया है।

भारत की जनसंख्या पर विचार किया जाए तो निश्चित तौर पर इसका एक महत्वपूर्ण पहलू जो सामने आता है, वह है– लैंगिक विषमता। इस पहलू पर इसलिए भी विचार करना आवश्यक है क्योंकि यह समृद्ध भारत के हित में नहीं है। 2001 की जनगणना पर गौर करें तो हम देखते हैं कि भारत के विभिन्न प्रांतों में स्थिति सुखद नहीं रही है। यह एक सामाजिक विषमता की ओर इशारा करता है। यदि भारत में लोगों को इस ओर जागरुक नहीं किया गया तो स्थिति अत्यंत भयावह हो सकती है। अत: जनजागरण को जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा से अवगत कराना अत्यंत आवश्यक है।

आर. सी. शर्मा के अनुसार ''जनसंख्या शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्र जनसंख्या तथा उनके पर्यावरण के मध्य की अंतर्क्रिया, जनसंख्या की विशेषताओं, जनसंख्या परिवर्तन के कारणों व नियंत्रण विधियों एवं जनसंख्या वृद्धि का स्थानीय, राष्ट्रीय तथा सामूहिक स्तर की जैविकीय व सामाजिक प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है।

डी. गोपाल राव के अनुसार, "जनसंख्या शिक्षा वह शैक्षिक कार्यक्रम है जिसमें जनसंख्या विषय के अध्ययन को इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है कि छात्र-छात्राएँ जनसंख्या वृद्धि

**सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली –110016

से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के विषय में तार्किक निर्णय ले सकें।"

जनसंख्या शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निम्नवत् हैं–

(1) तीव्र जनसंख्या वृद्धि परिस्थिति संतुलन (Ecological Balance) को छिन्न-भिन्न कर रही है।

(2) जनसंख्या सीमित (Population Reduction) करने का सर्वाधिक सबल तथा उपयुक्त माध्यम शिक्षा है।

(3) शिक्षा के माध्यम से तीव्र जनसंख्या वृद्धि के प्रति जनसाधारण में सामाजिक चेतना (Social Awareness) उत्पन्न की जा सकती है।

(4) जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रयास है। यह यौन शिक्षा (Sex Education) अथवा परिवार नियोजन (Family Planning) का कार्यक्रम नहीं है।

(5) जनसंख्या शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो शिक्षा के सभी स्तरों पर तथा सभी प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों में दी जानी चाहिए।

(6) जनसंख्या शिक्षा मानव जनसंख्या का अध्ययन है जो मुख्यत: जनसंख्या वृद्धि के कुपरिणामों को प्रस्तुत करता है। 1952 ई. में भारत विश्व के प्रथम देशों में था जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम launch (प्रस्तुत) किया गया जिसने परिवार नियोजन पर ज़ोर देकर जन्मदर में नियंत्रण करने की पहल की। इसके बाद राष्ट्रीय कार्यक्रम कई बदलावों से गुजरा यथा जच्चा एवं बच्चा स्वास्थ्य (MCH) और (CSSM) RCH (Reproductive and Child Health)–1997 और 2000 में सरकार ने राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (NPP) की घोषणा की।

पिछले कुछ दशकों से भारत के संदर्भ में देखा जाए तो स्थितियाँ थोड़ी अनुकूल रही हैं। भारत में एक सामान्य अवधारणा रही कि भारत जनसंख्या विस्फोट की तरफ अग्रसित है। परंतु वास्तविकता थोड़ी अलग है। इसे निम्न तालिका से समझा जा सकता है।

दशक	वृद्धिदर में गिरावट
1971–81	–24.6%
1881–91	–23.9%
1991–2001	–21.3%

जनसंख्या वृद्धिदर में गिरावट एक शुभ संकेत है। सरकार द्वारा कि गयी विभिन्न प्रयासों के द्वारा ही यह संभव हो पाया है। जनजागरण में भी पहले की अपेक्षा जनसंख्या को लेकर ज़्यादा जागरुकता आयी है।

जनसंख्या के दूसरे पहलू स्त्री एवं पुरुषों के लैंगिक अनुपात पर विचार करें।

लैंगिक अनुपात को वस्तुत: 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या से आँका जाता है। यह एक पैमाना है जिसके आधार पर समाज में लैंगिक समानता को मापा जाता है।

सारणी-1 लैंगिक अनुपात भारत के संदर्भ में (1901-2001)

वर्ष	लैंगिक अनुपात (1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या)	दशक में बदलाव
1901	972	
1911	964	-8
1921	955	-11
1931	950	-5
1941	945	-5
1951	946	+1
1961	941	-5
1971	930	-11
1981	934	-4
1991	927	-7
2001	933	+6

स्रोत- *भारत की जनगणना, 2001*

सारणी-1 पर गौर किया जाए तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि 19वीं शताब्दी के आरंभ से ही देश का लैंगिक अनुपात स्त्रियों के अनुकूल नहीं रहा है। दशकों में होने वाले परिवर्तनों पर निगाह डालें तो यह -8, -11, -5 और -5, 1911, 1921, 1931 और 1941 में रही है। सिर्फ 1951 में ही इसमें +1 की बढ़ोतरी दर्ज की गई। यह स्थिति अन्य विकसित देशों की तुलना में ठीक नहीं हैं।

सारणी-2 राज्यवार लैंगिक अनुपात की सूची

क्र.सं.	राज्य	जनगणना वर्ष					
		1951	1961	1971	1981	1991	2001
1.	जम्मू कश्मीर	873	878	878	892	896	900
2.	हिमाचल प्रदेश	912	938	958	973	976	970
3.	पंजाब	844	854	865	879	882	874
4.	चंडीगढ़	781	652	749	769	790	773
5.	उत्तराखंड	940	947	940	936	936	964
6.	हरियाणा	871	868	867	870	865	861
7.	रा.रा. क्षेत्र दिल्ली	768	785	801	808	827	821
8.	राजस्थान	921	908	911	919	910	922
9.	उत्तर प्रदेश	908	907	876	882	876	898
10.	बिहार	1,000	1,005	957	948	907	921
11.	सिक्किम	907	904	863	835	878	875

क्र.सं.	राज्य	जनगणना वर्ष					
		1951	1961	1971	1981	1991	2001
12.	अरुणाचल प्रदेश	NA	894	861	862	859	901
13.	नागालैंड	999	933	871	863	886	909
14.	मणिपुर	1,036	1,015	980	971	958	978
15.	मिज़ोरम	1,041	1,009	946	919	921	938
16.	त्रिपुरा	904	932	943	946	945	950
17.	मेघालय	949	937	942	954	955	975
18.	असम	868	869	896	910	923	932
19.	अंडमान-निकोबार	625	617	644	760	818	846
20.	प० बंगाल	865	878	891	911	917	934
21.	झारखण्ड	961	960	945	940	922	941
22.	ओडिशा	1022	1001	988	981	971	972
23.	छत्तीसगढ़	1024	1008	998	996	985	990
24.	मध्य प्रदेश	945	932	920	921	912	920
25.	गुजरात	952	940	934	942	934	921
26.	दमन दीव	1125	1169	1099	1062	969	709
27.	दादर व नगर हवेली	946	963	1007	974	952	811
28.	महाराष्ट्र	941	936	930	937	934	922
29.	आँध्र प्रदेश	986	981	977	975	972	978
30.	कर्नाटक	966	959	957	963	960	964
31.	गोवा	1128	1066	981	975	967	960
32.	लक्षद्वीप	1043	1020	978	975	943	947
33.	केरल	1028	1022	1016	1032	1036	1058
34.	तमिलनाडु	1007	992	978	977	974	986
35.	पुदुच्चेरी	1030	1013	989	985	979	1001

सारणी-2 से स्पष्ट है कि केरल राज्य को छोड़ दें तो प्राय: सभी राज्यों की स्थिति में लैंगिक अनुपात में गिरावट दर्ज की गई है। 20वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों से पंजाब में स्थिति अच्छी नहीं थी परंतु बाद की जनगणना में इसमें क्रमश: सुधार देखा गया। हरियाणा, आँध्रप्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में लैंगिक अनुपात काफी कम रहा है।

भारत में राज्यवार लैंगिक विषमता के कुछ महत्वपूर्ण कारणों पर विचार करें तो यह

निम्न रूप में सूचीबद्ध की जा सकती है–

(1) संतान की चाहत,
(2) बालिकाओं के प्रति विभेद,
(3) समाज में दहेज की कुरीति,
(4) बालिकाओं की शादी की परेशानियाँ,
(5) गर्भावस्था के दौरान आसानी से हो रहे लिंग की जाँच आदि,
(6) चिकित्सीय मूल्यों का ह्रास और
(7) कुछ राज्य सरकारों द्वारा दो बच्चों की नीति का अनुपालन।

स्त्रियों की संख्या में गिरावट तो लगभग सभी दशक में दर्ज किया गया परंतु 2001 की जनगणना ने एक खतरे की घंटी बजा दी। वस्तुतः जनगणना संबंधी आँकड़ों का कुछ राज्यों में विशेषकर 0–6 वर्ष की बालिकाओं का लैंगिक अनुपात काफ़ी कम रहा। आँकड़ों से स्पष्ट है कि कुछ राज्यों एवं जिलों की स्थिति चिंतनीय हैं। अतः इस ओर ध्यान देना अत्यंत ज़रूरी हो जाता है।

सामाजिक अनुप्रयोग – लैंगिक अनुपात में दिनों-दिन हो रही गिरावट सामाजिक संरचना के बदलाव को भी दर्शाती है। इसके कुछ प्रभावों को निम्न रूप में अंकित किया जा सकता है–

(i) परिवार जैसे संस्था के ऊपर प्रभाव– परिवार के अंदर पुरुष एवं स्त्रियों की भूमिका परिवर्तित हो रही है। बच्चों एवं बुजुर्गों की देख-भाल के लिए वेतन देकर बाहर से लोगों को रखना पड़ रहा है।
(ii) विवाह जैसी संस्था के ऊपर प्रभाव– स्त्रियों की संख्या में ह्रास आने से पौलीगैमी विवाह की प्रथा बढ़ जाऐगी। स्त्रियों की स्थिति में दिनोंदिन गिरावट आ रही है।
(iii) स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न परेशानियाँ आ रही है। HIV/AIDS आदि रोगों का प्रभाव व्यापक हो रहा है।
(iv) स्त्रियों के प्रति हिंसा बढ़ रही है।
(v) स्त्रियों एवं बालिकाओं का शोषण हो रहा है।
(vi) स्त्रियों एवं बालिकाओं का अपहरण बढ़ रहा है।

अतः सामाजिक वैज्ञानिकों को आने वाले खतरों की पहचान करके कुछ प्रयास शिक्षा के आरंभिक स्तर से ही करने होंगे जिससे स्थिति नियंत्रित हो सके।